पाठ 7.1 : पद

D3GKK1

यहाँ हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के चार कवियों के पदों को संकलित किया गया है। इनमें तुलसी व सूर सगुण भक्ति काव्यधारा से हैं, तो कबीर व धरमदास निर्गुण काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तुलसीदास अवधी भाषा के अप्रतिम कवि हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में रामकथा को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया है। उनकी प्रमुख रचनाएँ **रामचरितमानस, दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका** इत्यादि हैं। यहाँ दिया हुआ पद विनयपत्रिका से लिया गया है। **सूरदास** ब्रज भाषा के कवि हैं। **सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी** आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उनके द्वारा लिखे गए श्रीकृष्ण के बाल–वर्णन ब्रज भाषा ही नहीं समूचे भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। **कबीर** मध्यकाल के अकेले कवि हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में कई देशज भाषाओं का प्रयोग किया हैं। उनकी कविताएँ मुख्यतः **साखी, सबद** और **रमैनी बीजक** में संकलित हैं, जिसमें साखी दोहा रूप में और सबद व रमैनी पद रूप में हैं। उनकी कविता अपने समय में ही नहीं, आज भी प्रासंगिक हैं। **धनी धरमदास** का जन्म 1433 में छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में हुआ था। वे कबीर के शिष्य थे और कबीर की विचारधारा को आगे बढ़ाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी रचनाएँ बाद में धरमदास की बानी के रूप में प्रकाशित हुईं।

तुलसीदास

मन पछितैहैं अवसर बीते।

दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम, बचन अरु ही ते।।

सहसबाहु, दसवदन आदि नृप बचे न काल बली ते।

हम–हम करि धन–धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते।।

सुत–बनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते।

अंतहु तोहि तजेंगे पामर! तू न तजै अबही ते।।

अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते।

बुझै न काम–अगिनि तुलसी कहुँ, बिषयभोग बहु घी ते।।

– विनय पत्रिका

सूरदास

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी
कटि कछनी पीतांबर बाँधे हाथ लए भौंरा चक डोरी
गए स्याम रवि तनया के तट, अंग लसति चंदन की खोरी
औचक ही देखीं तहँ राधा, नैन बिसाल भाल दिए रोरी
नील बसन फरिया कटि पहिरै, बेनि पीठि रुलति झकझोरी,
संग लरिकिनी चलि इति आवति, दिन थोरी अति छवितन गोरी,
सूरस्याम देखत ही रीझैं, नैन–नैन मिल परी ठगोरी।।

– सूरसागर

कबीर

साधो, देखो जग बौराना।
साँची कही तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।
हिन्दू कहत, राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ै मरत हैं, मरम कोई नहिं जाना।
बहुत मिले मोहि नेमी, धर्मी, प्रात करे असनाना।
आतम–छाँडि पषानै पूजै, तिनका थोथा ज्ञाना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीपर–पाथर पूजन लागे, तीरथ–बरत भुलाना।
माला पहिरे, टोपी पहिरे छाप–तिलक अनुमाना।
साखी सब्दै गावत भूले, आतम खबर न जाना।

– सबद

धनी धरमदास

हम सत्त नाम के बैपारी।
कोइ–कोइ लादै काँसा पीतल, कोइ–कोइ लौंग सुपारी।।
हम तो लाद्यो नाम धनी को, पूरन खेप हमारी।।
पूँजी न टूटै नफा चौगुना, बनिज किया हम भारी।।
हाट जगाती रोक न सकिहै, निर्भय गैल हमारी।।
मोती बूँद घटहिं में उपजै, सुकिरत भरत कोठारी।।
नाम पदारथ लाद चला है, धरमदास बैपारी।।

– धरमदास की बानी

शब्दार्थ

ही ते – हिय ते अर्थात हृदय से; **रीते** – खाली हाथ; **पामर** – पापी, दुर्जन; **दुरासा** – बुरी आशा; **खोरी** – गली; **चंदन की खोरी** – चंदन का टीका; **नेमी** – नियम का पालन करने वाला; **पीतांबर** – पीले रंग का कपड़ा; **रवि तनया** – सूर्य की पुत्री अर्थात यमुना; **बौराना** – पागल होना; **पतियाना** – विश्वास कर लेना; **डिंभ** – गर्भ, यहाँ पर पाखंड या आडंबर से है; **गुमाना** – घमण्ड करना; **बैपारी** – व्यापारी; **लाद्यो** – लाद लिया है; **बनिज** – व्यापार; **जगाती** – चौकीदार; **गैल** – रास्ता; **दसबदन** – रावण; **सहसबाहु** – हैहयवंश का एक बलशाली राजा।

अभ्यास

पाठ से

1. अवसर बीत जाने के पश्चात् पछताना क्यों पड़ता है? पद में दिए गए उदाहरणों के भाव लिखिए।
2. 'अंत चले उठि रीते' पंक्ति का भावार्थ क्या है?
3. 'सूरस्याम देखते ही रीझैं, नैन–नैन मिली ठगोरी' से कवि का क्या आशय है?
4. कबीर के पद में जग के बौराने का क्या अभिप्राय है?
5. 'मरम' से कबीर का क्या आशय है?
6. कबीर ने किसके ज्ञान को थोथा कहा है? और क्यों?
7. धनी धरमदास के पद में सत्य–व्यापार की बात की गई है। सत्य–व्यापार से कवि का क्या आशय है?
8. 'पूँजी न टूटै नफा चौगुना' से क्या अभिप्राय है?

पाठ से आगे

1. अवसर निकल जाने पर पछतावा होता है। जीवन में अवसर को कैसे पहचाना जाए?
2. अत्यधिक संग्रह की प्रवृत्ति सुखकर क्यों नहीं हो सकती है? अगर नहीं तो क्यों? अपने विचार लिखिए।
3. (क) 'औचक ही देखीं तहँ राधा' इस पंक्ति में औचक देखने से क्या आशय है?

   (ख) आप किसी परिचित को अचानक अपने सामने पाते हैं, तो आपके मन में क्या–क्या भाव आते हैं?
4. आपके अनुसार व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार कैसा होना चाहिए?
5. पद में किशोर कृष्ण और राधा के मिलने का वर्णन ब्रज भाषा में दिया है। आप इसे अपनी भाषा में लिखिए।

भाषा के बारे में

D3ZCNB

1. जहाँ एक ही ध्वनि की आवृत्ति होती है उसे अनुप्रास अलंकार कहा जाता है। जैसे– पीपर पाथर पूजन लागे (यहाँ 'प' ध्वनि की एक से अधिक बार आवृत्ति हो रही है) इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ पाठ से छाँट कर लिखिए।
2. आपके घर की भाषा और इन पदों की भाषा में किस तरह का अंतर व समानता है? इस पाठ में बहुत से शब्द होंगे, जो आपके घर की भाषा में भी थोड़े फेर बदल के साथ प्रचलित होंगे। उन शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

1. अपने घर परिवार और बड़े बूढ़ों से पता कीजिए कि कबीर के कौन–कौन से भजन गाए जाते हैं, अपने दोस्तों के साथ मिलकर उनका एक संकलन तैयार कीजिए।
2. ब्रज, अवधि एवं छत्तीसगढ़ी के अन्य भक्तिकालीन कवियों की रचनाएँ ढूँढ़कर पढ़िए।
3. नीचे कबीर के कुछ दोहे दिए गए हैं इन्हें भी पढ़िए। अर्थ के बारे में साथियों से चर्चा कीजिए।

DFDL4V

तिनका कबहुँ न नींदिये, जो पाँयन तर होय।
कबहुँ उड़ आँखिन परै, पीर घनेरी होय।। 1।।

रात गँवाई सोय के, दिवस गँवाया खाय ।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय।। 2 ।।

माँगन मरण समान है, मति माँगो कोई भीख ।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरु की सीख।। 3 ।।

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की श्वास से, लौह भस्म हो जाय।। 4 ।।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा–परजा जेहि रुचै, शीश देई ले जाय।। 5 ।।

शब्दार्थ

निंदिये – निन्दा करना या बुरा भला कहना; **पीर** – दर्द; **बाड़ी** – सब्जी की बगिया।